Mangalacharana Sandhi - 2
Jayagalu agali - 6
guru madhwaraayarige - 7
rAGaveMdra gururAyara sEvisiro - 8
satata gaNanAtha - 9
satya jagatidu paMca - 10
vaMdipe ninage gaNanAtha -11
aa pa-raMtapa – HKS padya -12
namaH pArvati - 12
kRuti-ramaNa – HKS Padya -13
catura- vadanana – HKS Padya -13
pavamAna jagadaprANa -14
veera hanuma -15
SrI mahAlakShmiya -16
hosakaNNu enage -17
jaya kolhApura nilayE -18
vEMkaTaramaNane bArO - 20
baMdanO gOviMda -21
shrInivAsa nInE -21
manyusUktaM -22
nArAyaNa nArAyaNa -25
biDenO ninnaMghri -27
SrInivAsA gOviMdA -29

sATiyuMTe SrInivAsana - 41
vArijalayapate vArijanABane - 42
jai jai rAma harE - 44
naMdEnadO svAmi - 47
Preenayamo - 48
Kuru bhumkshva - 52
Mastyakarupa - 53
Srinivasa Kalyana - 55
Venkatesha Stavaraja -60
Bega horata - 65
kattida mangalasutrava - 66
Vara vaikunthadi - 67
Ninna olumeyinda - 69

१. मंगळाचरण शंधि

हरिक–थामृत –– सार–गुरुगळ ।

करुण–दिंदा –– पनितु–पॆळुवे ।

परम–भगवद् –– भक्त–रिदना –– दरदि–कॆळुवु–दु ॥ प ॥

श्रीर–मणि कर –– कमल– पूजित ।

चारु– चरण स –– रॊज– ब्रह्म स– ।

मीर– वाणि फ –– र्णींद्र– वींद्र भ –– वॆंद्र– मुख विनु–त ॥

नीर–ज भवां –– डॊद–य स्थिति ।

कार–णने कै –– वल्य–दायक ।

नार–सिंहने –– नमिपे–करुणिपु –– देमगे–मंगळ–व ॥ १–१ ॥

जगदु–दरनति –– विमल–गुणरू– ।

पगळ–नालॊ –– चनदि– भारत ।

निगम–ततिगळ –– तिक्र–मिसि क्री –– या वि–शेषग–ळ ॥
बगे– बगेय–नू –– तनव– काणुत ।
मिगे– हरुष–दिं –– पोगळि– हिग्गुव ।
त्रिगुण–मानि म –– हाल–कुमि सं –– तैस–लनुदिन–वु ॥ १–२ ॥

निरुप–मानं –– दात्म–भव नि– ।
र्जर स–भा सं –– सेव्य– ऋजु गण– ।
दरसे– सत्व –– प्रचुर–वाणी –– मुख स–रोजे–न ॥
गरुड– शेष श –– शांक– दळ शे– ।
खरर– जनक ज –– गद्दु–रुवे त्व– ।
द्यरण–गळिगभि –– वंदि–सुवे पा –– लिपुदु– सन्मति–य ॥ १–३ ॥

आरु– मूरेर –– डोंदु–साविर ।
मूरे–रडु शत –– श्वास– जपगळ ।
मूरु–विध जी –– वरोळ–गब्जज –– कल्प– परियं–त ॥
ता र–चिसि सा –– त्वरिगे–सुख सं– ।
सार– मिश्ररि –– गधम– जनरिग– ।
पार– दु:खग –– ळीव–गुरु पव –– मान– सलहे–म्म ॥ १–४ ॥

चतुर– वदनन –– राणि– अतिरो– ।
हित–विमल वि –– ज्ञानि– निगम ।
प्रतति–गळिगभि –– मानि–वीणा –– पाणि– ब्रह्मा–णि ॥
नतिसि– बेडुवे –– जननि– लक्ष्मी– ।

पतिय– गुणगळ –– तुतिपु–दके स– ।
न्मतिय– पालिसि –– नेलेसु–नी मद् –– वदन– सदनद–लि ॥ १–५ ॥

कृति–रमण–प्र –– द्युम्न – नंदने ।
चतुर–विंशति –– तत्व–पति दे– ।
वतेग–ळिगे गुरु –– वेनिसु–तिह मा –– रुतन– निजप–त्रि ॥
सतत–हरियलि –– गुरुग–ळलि स– ।
द्रतिय–पालिसि –– भाग–वत भा– ।
रत पु–राण र –– हस्य–तत्वग –– ळरुपु–करुणद–लि ॥ १–६ ॥

वेद–पीठ वि –– रिंचि– भव श– ।
क्रादि– सुर वि –– ज्ञान– दायक ।
मोद– चिन्मय –– गात्र–लोक प –– वित्र– सुचरि–त्र ॥
छेद– भेद वि –– षाद– कुटिलां– ।
तादि– मध्य वि –– दूर– आदा– ।
नादि– कारण –– बाद–रायण –– पाहि– सत्रा–ण ॥ १–७ ॥

क्षितियो–ळगे मणि –– मंत– मोदला– ।
दति दु–रात्मरु –– ओंद–धिक विं– ।
शति कु–भाष्यव –– रचिसे– नडुमने –– येंब– ब्राह्मण–न ॥
सतिय– जठरदो –– ळवत–रिसि भा– ।
रति र–मण म –– ध्वाभि–धानदि ।
चतुर–दश लो –– कदलि–मेरेद –– प्रतिम–गोंदिसु–वे ॥ १–८ ॥

पंच– भेदा –– त्मक प्र–पंचके ।
पंच– रूपा –– त्मकने– दैवक ।
पंच– मुख श –– क्रादि–गळु किं –– कररु– श्रीहरि–गे ॥
पंच– विंशति –– तत्व– तरतम ।
पंचि–केगळनु –– पॆळद– भावि वि–।
रिंचि– येनिपा –– नंद–तीर्थर –– नेनेवे–ननुदिन–वु ॥ १–९ ॥

वाम–देव वि –– रिंचि–तनय उ– ।
मा म–नॊहर –– उग्र– धूर्जटि ॥
साम–जाजिन –– वसन– भूषण –– सुमन–सॊत्तं–स ॥
काम–हर कै –– लास– मं–दिर ।
सॊम–सूर्या –– नल वि–लॊचन ।
कामि–तप्रद –– करुणि–सेमगे स –– दा सु–मंगळ–व ॥ १–१० ॥

कृत्ति–वासने –– हिंदे– नी ना– ।
ल्वत्तु– कल्प स –– मीर–नलि शि– ।
ष्यत्व– वहिसखि –– ळाग–मार्थग –– ळॊदि– जलधियो–ळु ॥
हत्तु– कल्पदि––तपव– गैदा– ।
दित्य–रोळगु –– त्तमने–निसि पुरु– ।
षॊत्त–मन परि –– यंक– पदवै –– दिदेयो– महदॆ–व ॥ १–११ ॥

पाक–शासन –– मुख्य– सकल दि– ।

वौक–सरिगभि –– नमिपे– ऋषिगळि– ।
गॊक–चित्तदि –– पितृग–ळिगे गं –– धर्व– क्षितिपरि–गे ॥
आ क–मलना –– भादि– यतिगळ ।
नीक–कानमि –– सुवेनु– बिडदे र– ।
माक–ळत्रन –– दास–वर्गके –– नमिपे–ननवर–त ॥ १–१२ ॥

परिम–ळवु सुम –– नदोळ–गनलनु ।
अरणि–योळगि –– प्पंते– दामॊ– ।
दरनु– ब्रह्मा –– दिगळ– मनदलि –– तॊरि– तॊरद–ले ॥
इरुति–ह जग –– न्नाथ– विठलन ।
करुण– पडेव मु –– मुक्षु– जीवरु ।
परम– भागव –– तरनु– कोंडा –– डुवुदु– प्रतिदिन–वु ॥ १–१३ ॥
––––––––––––––––––––––
जयगळु आगलि अपजयगळु हॊगलि
जयदॆवी रमणा ओलियलि कॊलॆ
जयदॆवी रमणा ओलियलि नम्म
विजयरायर कीर्ति मेरेयलु कॊले
दसरायर कीर्ति मेरेयलु कॊले ।१।

हरियॆ सर्वॊत्तम हरियॆ परदॆवते
हरिदासरेंबॊ बिरुदिन कॊले
हरिदासरेंबॊ बिरुदिन हेक्काले
हिरिबागिलोळगे नुडिसॆवु कॊले ।२।

पन्नंग शयन सुपर्ण वाहन
सुपर्ण वाहन सुखपूर्ण कॊले
सुपर्ण वाहन सुखपूर्णनाद
मॊहन विठ्ठल करुणिसु कॊले ।३।

कॊलु कॊले रंग कॊलु कॊले
कॊलु कॊले कृष्ण कोलु कोले ॥

गुरु मध्वरायरिगे नमॊ नमॊ । नम्म
गुरु जयरायरिगे नमॊ नमॊ ॥ प ॥

श्रीपादराजरिगे गुरुव्यासराजरिगे ।
गुरुवादिराजरिगे नमॊ नमॊ ॥ १ ॥

राघवेंद्ररायरिगे वैकुंठदासरिगे।
पुरुंदरदासरिगे नमॊ नमॊ ॥ २ ॥

गुरु विजयदासरिगे भागण्णदासरिगे ।
श्रीरंगवलिद दासरिगे नमॊ नमॊ ॥ ३ ॥

परम वैराग्यशालि तिम्मण्णदासरिगे ।
हुंडेकार दासरिगे नमॊ नमॊ ॥ ४ ॥

गुरु श्रीशविठलन परम भक्तर चरण ।
सरसिजयुगगळिगे नमॊ नमॊ ॥ ५ ॥

राघवेंद्र गुरुरायर सॆविसिरो,
सौख्यदि जीविसिरो [प]

तुंगातीरदि रघुरामन पूजिपरो,
नरसिंघन भजकरॊ [अ.प]

श्री सुधींद्र कर सरॊज संजाता
जगदोळगे पुनीता
दाशरतिय दासत्वव ता वहिसि,
दुर्मतिगल जयिसि
ऎअ समीर मत संस्तापकरागि,
निंदकरनु नीगि
भूसुररिगे सम्सॆव्य सदाचरणी,
कंगॊलिसुव करुणि [१]

कुंददे वर मंत्रालयदल्लिरुव
करेदल्लिगे बरुव
बृंदवनगत मृत्तिके जलपान
मुकुतिगे सॊपान,

संदरुशन मात्रदलि महत्पाप
बडेदॊडिसलाप
मंद भाग्यरिगे दोरकदिवर सॆव,
शरणर संजीवा [२]

श्रीद विठ्ठलन सन्निधान पात्र
संस्तुतिसलु मात्र,
मॊद पडिसुतिह तानिहपरदल्लि
ईतगे सरियेल्लि
मॆदिनियोळगे इन्नरसलु ना काणे
पुसियल्लय एन्णाणे
पाद स्मरणेय माडदवने पापि,
ना पॆळ्वेनु स्थापि [३]

सतत गणनाथ सिद्धियनीव कार्यदलि
मति प्रेरिसुवळु पार्वति दॆवी ॥प॥

मुकुति पथके मानवीव महारुद्र दॆवरु,
हरि भकुति दायकळु भारतिदॆवि,

युकुति शास्त्रगळ्ललि वनज संभवनरसि
सत्कर्मगळ नडेसि सुज्ञान मति इत्तु,

गति पालिसुव नम्म पवमाननु
चित्तदल्लि आनंद सुखवनीवळु रमा,

भकुत जनरोडेय नम्म पुरंदर विठलनु,
सतत इवरल्लि निंतु ई कृतिय नडेसुवनु ॥

सत्य जगतिदु पंच भॆदवु , नित्य श्री गॊविंदन
कृत्यवरितु तारतम्यदि कृष्णनधिकेंदु सारिरै [प]

जीव ईशगे भॆद सर्वत्र
जीव जीवके भॆदवु
जीव जड जड जडके भॆद
जीव जड परमात्मगे [१]

मानुषॊत्तमगधिक क्षितिपरु
मनुज दॆव गंधर्वरु
ज्ञानि पित अजानज कर्मज
दानवारि सत्वात्मरु [२]

गणप मित्ररु सप्त ऋषिगळु
वह्नि नारद वरुणनु
इनजगे सम सूर्य चंद्ररु
मनुसतियु हेच्चु प्रवहनु [३]

दक्ष सम अनिरुद्ध गुरु शचि
रति स्वायंभुवरार्वरु
पक्ष प्राणनिगिंत कामनु
किंचिदधिकनु इंद्रनु [४]

दॆव इंद्रनिगधिक महरुद्र
दॆव सम शॆषगरुडरु
कॆवलधिकरु शॆश गरुडगे
दॆवि भारति सरस्वति [५]

वायुविगे समरिल्ल जगदोळु
वायु दॆवरे ब्रह्मरु
वायु ब्रह्मगे कॊटि गुणदिंद
अधिक शक्तळु श्री रमा [५]

अनंत गुणदिं लकुमिगधिकनु
श्री पुरंदरविठलनु
घन समरु इवगिल्ल जगदोळु
हनुम ह्रत्पद्म वासिगे [६]

वंदिपे निनगे गणनाथ, मोदलोंदिपे निनगे गणनाथ,
बंद विघ्न कळे गणनाथ ॥

हिंदे रावणनु मददिंद निन्न पूजिसदे,
संद रणदलि गणनाथ १

माधवन आज्ञेयिंद धर्मराज पूजिसलु,
साधिसिद राज्य गणनाथ २

मंगळ मूरुति गुरु रंग विठ्ठलन पाद ,
हिंगदे पालिसु गणनाथ ३

आ प–रंतप -- नोलुमे–यिंद स– ।
दाप–रॊक्षिग -- ळेनिसि– भगव– ।
द्रूप– गुणगळ -- महिमे– स्वपतिग -- ळान–नदि तिळि–व ॥
सौप–रणि वा -- रुणि न–गात्मज– ।
राप–नितु ब -- ण्णिसुवे– एन्न म– ।
हाप–राधग -- ळेणिस–दीयलि -- परम– मंगळ–व ॥ ३२–१५ ॥

नमः पार्वति पति नुत जनपर नमो विरूपाक्ष ।प्।
रमा रमणनलि अमल भकुति कोडु नमो विशालक्ष ।अप्।

नीलकंठ त्रिशूल डमरु हस्तालंकृत रक्ष
फालनेत्र कपाल रुंड मणि मालाधृत वक्ष ॥
शीलरम्य विशाल सुगुण सल्लील सुराध्यक्ष

श्री लकुमीशन ऑलैसुव भक्तावळिगळ पक्ष (१)

वासवनुत हरिदास ईश कैलासवास देव
दाशरथिय औपासक सुजनर पोशित प्रभाव।
भाषिसुतिहुदु अपेक्ष जीवरिगे ईश नेंब भाव
श्रीशनल्लि कीलिसु मनव गिरिजेश महादेव (२)

मृत्युंजय निन्नुत्तम पदयुग भृथ्यन सर्वत्र
हत्तिर करेदु अपत्यनंते कायुत्तिरो त्रिनेत्र
तेत्तिगनंते कायुत्तिदे जाणन सत्यदि सुचरित्र
कर्तृ उदुपि सर्वोत्तम कृष्णन पौत्र कृपापात्र (३)

कृति–रमण–प्र –– द्युम्न – नंदने ।
चतुर–विंशति –– तत्व–पति दे– ।
वतेग–ळिगे गुरु –– वेनिसु–तिह मा –– रुतन– निजप–त्रि ॥
सतत–हरियलि –– गुरुग–ळलि स– ।
द्रतिय–पालिसि –– भाग–वत भा– ।
रत पु–राण र –– हस्य–तत्वग –– ळरुपु–करुणद–लि ॥ १–६ ॥

चतुर– वदनन –– राणि– अतिरो– ।
हित–विमल वि –– ज्ञानि– निगम ।
प्रतति–गळिगभि –– मानि–वीणा –– पाणि– ब्रह्मा–णि ॥
नतिसि– बेडुवे –– जननि– लक्ष्मी– ।

पतिय– गुणगळ –– तुतिपु–दके स– ।

न्मतिय– पालिसि –– नेलेसु–नी मद् –– वदन– सदनद–लि ॥ १–५ ॥

––––––––––––––––––––

पवमान पवमान

पवमान जगदप्राण संकरुषण

भवभयारण्य दहना, पवन ॥प॥

श्रवणवे मोदलाद नवविध भकुतिय।

तवकदिंदलि कोडु कविजन प्रिय॥अ.प॥

हैमकच्चुट उपवीत धरिप मारुत ।

कामादि वर्गरहित ॥

व्योमादि सर्व व्यापुत सतत निर्भीत ।

रामचंद्रन निजदूत ॥

याम यामके निन्नाराधिपुदके ।

कामिपे एनगिदु नेमिसि प्रतिदिन ।

ईमनसिगे सुखस्तोमव तोरुत ।

पामरमतियनु नी माणिपुदु ॥१॥

वज्र शरीर गंभीर मुकुटधर ।

दुर्जन वनकुठार ।

निर्जर मणि दयापार वार उदार ।

सज्जन रघपरिहार ॥

अर्जुनगोलिदंदु ध्वजवानिसिनिंदु ।

मूर्जगवरिवंते गर्जने माडिदे ।
हेज्जे हेज्जेगे निन्न अब्जपादद धूळि ।
मार्जनदलि भव वर्जितनेनिसो ॥२॥

प्राण अपान व्यानॊदान समान ।
आनंद भारति रमण ।
नीने शर्वादि गीर्वाण द्यमररिगे ।
ज्ञान धन पालिप वरेण्या ।
नानु निरुतदलि ऎनेनेसगिदे ।
मानसादि कर्म निनगोप्पिसिदेनो ।
प्राणनाथ सिरिविजय विठ्ठलन ।
काणिसि कोडुवुदु भानु प्रकाशा ॥३॥

वीर हनुम बहु पराक्रम
सुज्ञानवित्तु पालिसेन्न जीवरॊत्तम ॥

रामदूत नेनिसिकोंडे नी ,
राक्षसर वनवनेल्ल कित्तु बंदे नी
जानकिगे मुद्रेयित्तु , जगतिगेल्ल हरुषवित्तु चूडा–
मणिय रामगित्तु लोकके मुद्देनिसि मेरेव ॥१॥

गॊपि–सुतन पाद पूजिसि
गदेय धरिसि बकासुरन संहरिसिदे
द्रौपदिय मोरेय कॆळि मत्ते कीचकन्न कोंदु

भीमनेंब नाम धरिसि संग्राम धीरनागि जगदि ॥२॥
मध्यगेहनल्लि जनिसि नी
बाल्यदल्लि मत्सरिय रूपगोंडे नी
सत्यवतिय सुतन भजिसि सम्मुखदि भाष्य माडि
सज्जन पोरेव मुद्दु पुरंदर विठ्ठलन दास ॥३॥

श्री महालक्ष्मिय अलंकरिसि करेदरु ॥
केशव निम्म नाम मांगल्यसूत्र ताळि
नारायण निम्म नाम ताळि पदकवु
माध्व निम्म नाम सुरगि संपिगे मोग्गु
गोविंद निम्म नाम गोदिय सरवु ॥१॥

विष्णुवे निम्म नाम रत्न कुंडलगळु
मधुसूदन निम्म नाम माणिक्यद हरळु
त्रिविक्रम निम्म नाम वंकि नागमुरुगेयु
वामन निम्म नाम ओले ऐकावळियु ॥२॥

श्रीधर निम्म नाम ओळ्ळे मुत्तिन हार
हृषिकेश निम्म नाम कडग गेज्जेयु
पद्मनाभ निम्म नाम मुत्तिनड्डिगेयु
दामोदर निम्म नाम रत्नद पदकवु ॥३॥
संकर्षण निम्म नाम वंकि तोळायितु
वासुदेव निम्म नाम ओलिद तोडे

प्रद्युम्न निम्म नाम हस्तकंकण बळे
अनिरुद्ध निम्म नाम मुकुर बुलाकु ॥४॥

पुरुषोत्तम निम्म नाम होस मुत्तिन मूगुति
अधोक्षज निम्म नाम चंद्र सूर्य
नरसिंह निम्म नाम चौरि रागटि गोंडि
अच्युत निम्म नाम मुत्तिन बट्टलु ॥५॥

जनार्दन निम्म नाम जरिय पीतांबर
उपेंद्र निम्म नाम कडग गेज्जेयु
श्रीहरि निम्म नाम कंचु वंकिय तुळसि
श्रीकृष्ण निम्म नाम नडुविनोड्याणवु ॥६॥

सरसिजाक्ष निम्म नाम अरशिन एण्णेय हच्चि
पंकजाक्ष निम्म नाम कुंकुम काडिगेयु
पुरंदर विठ्ठल निम्म नाम सर्वाभरणवु
निलुव कन्नडियलि ललनेय तोरिसुत ॥७॥

होसकण्णु एनगे हच्चलिबेकु जगदंबा ।
वसुदेव सुतन कांबुदके ॥ प ॥
घसणेयागिदे भव विषय वारिधियोळु ।
शशिमुखि करुणदि कायॆ ॥अ. प.॥

परर अन्नवनुंडु । परर धनव कोंडु
परि परि क्लेशगळिंद ॥
वरमहालकुमि निन्न चरणक्के मोरेहोक्के करुणदि कण्णेत्ति नॊडॆ ॥ १ ॥

मंदहासिनि भव । सिंधुविनोळगिट्टु । छंदवे अम्म नॊडुवदु ।
कंदर्नेतेंदेन्न कुंदुगळेणिसदे ।
मंदरोद्धरन तॊरम्म ॥ २ ॥

अंद चंदगळोल्ले । बंधु बळगवनोल्ले ।
बंधनकेल्ल कारणवु ॥
इंदिरेशन पाद द्वंद्वव तोरि ।
ह्रन्मंदिरदोळु बंदु निल्ले ॥ ३ ॥

जय कोल्हापुर निलये भजदिष्टेतर विलये
तव पादौ हृदिकलये रत्न रचित वलये ॥

जय जय सागर जाते कुरुकरुणां मयि भीते
जगदंबा भिदयाते जीवति तवपोते ॥१॥

जय जय सागर सदने जय कांत्याजित मदने
जय दुष्टांतक कदने कुंद मुकुलरदने ॥२॥

सुर रमणि नुत चरणे सुमनः संकट हरणे
सुस्वर रंजित वीणे सुंदर निज किरणे ॥३॥

कुंकुम रंजित फालॅे कुंजर बांधव लोलॅे
कलधौतामल चेलॅे कृंत कुजन जालॅे ॥४॥

भजदिंदीवर सोमॅे भव मुख्यामर कामॅे
भय मुलाळिविरामॅे भंजित मुनि भीमॅे ॥५॥

धृत करुणा रस पूरॅे धन दानोत्सव धीरॅे
ध्वनिलव निंदित कीरॅे धीरॅे दनुज धारॅे ॥६॥

सुर हृत्पंजर कीरॅे सुमगेहार्पित हारॅे
सुंदर कुंजविहारॅे सुरवर परिवारॅे ॥७॥

वरकबरी धृतकुसुमॅे वरकनकाधिक सुषमॅे
वननिलया दय भीमॅे वदन विजित सोमॅे ॥८॥

मदकलभा लसगमनॅे मधु मथना लसनयनॅे
मृदु लोलालक रचनॅे मधुर सरस गानॅे ॥९॥

व्याघ्रपुरी वरनिलयॅे व्यास पदार्पित हृदयॅे
कुरु करुणां मयि सदयॅे विविध निगमगेयॅे ॥१०॥

वेंकटरमणने बारो
शेषाचल वासने बारो [प]
पंकज नाभपरम पवित्र
शंकर मित्रने बारो [अ.प]

मुद्दु मुखद मगुव
निनगे मुद्दु कोडुवेनु बारो
निर्दयवेको निन्नोळगे नानु
पोंदिद्देनु बारो [१]

मंदर गिरियनेत्तिदानंद
मूरुतिये बारो
नंदनकंद गोविंद मुकुंद
इंदिरेयरसने बारो [२]

कामनय्य करुणाळो
श्यामल वर्णने बारो,
कोमलांग श्री पुरंदर विठलने
स्वामि रायने बारो [३]

बंदनॊ गॊविंद चंददि आनंद ।
सुंदरिय मंदिरक्के नंदन कंद, आ नंदन कंद ॥ प ॥

सुंदराकार बंद नंद कंद गंभीर ।
इंदु वदनेयरा मुखगळंद नॊडिद ।
गंध कुसुमा कर–दिंद मुडिसिद ।
नंदनो आनंदनो अर–विंद नयन ॥ १ ॥

काननादल्लि बलु दीरादल्लि ।
वॆणुनादवू ता कूडि मॊददि ।
जाणनिवनू सुम बाण पितनु ।
मानिनिय मनेगळल्लि गान माडुता,
इव गान माडुत्त ॥ २ ॥

ऒडि बंदरॊ बलु बॆडिकोंडरॊ ।
गाडिगारनू अवर कूडि मेरेदनू ।
माडिद जाल वासुदॆव विठल ।
माडिद मन माडिद ता कूडिदनाग ॥ ३ ॥

श्रीनिवास नीनॆ पालिसॊ श्रुतजन पाल
गानलॊल श्री मुकुंदनॆ ॥ प ॥

ध्यानमाळप सज्जनर मानदिं परिपालिप

वेणुगोपाला गोविंद वेदवेद्य नित्यानंद ॥अ.प॥

एंदिगे निन्न पादाब्जव पोंदुव सुख
एंदिगे लभ्यवो माधव
अंधकारण्यदल्लि निंदु तत्तरिसुतिहेनो
अंदर्दिं भवाब्धियोळु मिंदु नोंदेनो मुकुंद ॥१॥

एष्टु दिन कष्ट पडुवुदो
यशोदे कंद दृष्टियिंद नोडलागदे
मुट्टि निन्न भजिसलारे केट्ट नरजन्मदव
दुष्ट कार्य माडिदाग्यु इष्टनागि कैय्यपिडिदु ॥२॥

अनुदिन अनेक रोगगळा अनुभविसिदेनो
घन्न महिम नीने केळय्या
तनुविनल्लि बलविल्ल नेनेद मात्र सलहुव
हनुमदीश पुरंदर विठलने नी कैय्य पिडिदु ॥३॥

अथ मन्युसूक्तं
ऋग्वेद संहिता; मंडलं १०; सूक्तं ८३,८४

यस्ते म॒न्योऽविधद् वज्र सायक॒ सह॒ ओज:॑ पुष्यति॒ विश्व॑मानु॒षक् ।
सा॒ह्याम॒ दास॒मार्यं॑ त्वया यु॒जा सह॑स्कृतेन॒ सह॑सा॒ सह॑स्वता ॥ १ ॥

म॒न्युरिंद्रो॑ म॒न्यु॒रे॒वास॑ दे॒वो॑ म॒न्युर् हो॑ता॒ वरु॑णो॑ जा॒तवे॑दाः ।
म॒न्युं–विँश॑ ईळते॒ मानु॑षी॒र्याः पा॒हि नो॑ मन्यो॒ तप॑सा स॒जोषाः ॥ २ ॥

अ॒भीहि मन्यो॑ त॒वस॒स्तवीया॒न् तप॑सा यु॒जा वि जं॑हि शत्रून् ।
अ॒मि॒त्र॒हा वृं॑त्र॒हा दं॑स्यु॒हा च॒ विश्वा॒ वसू॒न्या भ॑रा॒ त्वं नः॑ ॥ ३ ॥

त्वं हि मन्यो॑ अ॒भिभू॑त्योजाः स्वयं॒भूर्भामो॑ अभिमातिषा॒हः ।
वि॒श्वच॑र्–षणि॒ः सहु॑रि॒ः सहावा॒नस्मास्वोज॒ः पृत॑नासु धे॑हि ॥ ४ ॥

अ॒भा॒गः सन्नप॒ परे॑तो॑ अस्मि॒ तव॒ क्रत्वा तवि॒षस्यं॑ प्रचे॑तः ।
तं त्वा मन्यो॑ अक्र॒तुर्जि॑हीळा॒हं स्वात॒नूर्ब॑ल॒दे॑याय॒ मेहिं ॥ ५ ॥

अ॒यं ते॑ अ॒स्म्युप॒ मेह्य॒र्वाङ् प्र॑तीची॒नः सं॑हु॒रे विश्वधायः ।
मन्यो॑ वज्रिन्न॒भि मामा व॑वृत्स्वहनाव॒ दस्यून् ऋ॒त बो॑ध्या॒पेः ॥ ६ ॥

अ॒भि प्रे॑हिं दक्षिण॒तो भ॑वा॒ मेऽधा वृ॒त्राणिं जंघनाव॒ भूरिं ।
जु॒हो॑मिं ते॑ ध॒रुणं॒ मध्वो॒ अग्र॑मुभा उ॑पां॒शु प्र॑थ॒मा पिं॑बाव ॥ ७ ॥

त्वया मन्यो॑ स॒रथ॑मारु॒जंतो॒ हर्ष॑माणासो॑ धृषि॒ता म॑रुत्वः ।
ति॒ग्मे॑षव॒ आयु॑धा सं॒शिशाना अ॒भि प्रयंतु॒ नरो॑ अ॒ग्निरूपाः ॥ ८ ॥

अ॒ग्निरिंव मन्यो॑ त्विषि॒तः स॑हस्व से॑ना॒नीर्नः॑ सहु॒रे हू॒त ऐ॑धि ।
ह॒त्वाय॒ शत्रू॒न् वि भ॑जस्व॒ वेद॒ ओजो॒ मिमानो॒ विमृधो॑ नुदस्व ॥ ९ ॥

सहस्व मन्यो अभिमातिमस्मे रुजन् मृणन् प्रमृणन् प्रेहि शत्रून् ।
उग्रं ते पाजो नन्वा रुरुध्रे वशी वशं नयस ऐकज त्वम् ॥ १० ॥

ऐको बहूनामसि मन्यवीळितो विशंविंशं–युँधये सं शिंशाधि ।
अकृत्तरुक् त्वया युजा वयं द्युमंतं घोषं–विंजयाय कृण्महे ॥ ११

विजेषकृदिंद्र इवानवब्रवो(ओ)३ऽस्माकं मन्यो अधिपा भवेह ३
प्रियं ते नाम सहुरे गृणीमसि विद्मातमुत्सं–यँत आबभूथ ॥ १२ ॥

आभूत्या सहजा वज्र सायक सहो बिभर्ष्यभिभूत उत्तरम् ।
क्रत्वा नो मन्यो सहमेद्येधि महाधनस्य पुरुहूत संसृजि ॥ १३ ॥

संसृष्टं धनमुभयं समाकृतमस्मभ्यं दत्तां–वँरुणश्च मन्युः ।
भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः पराजितासो अप निलयंताम् ॥ १४ ॥

धन्वनागाधन्व नाजिंजयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम ।
धनुः शत्रोरपकामं कृणोति धन्व नासर्वाः प्रदिशो जयेम ॥

ओं शांता पृथिवी शिवमंतरिक्षं द्यौर्नो देव्यऽभयन्नो अस्तु ।
शिवा दिशः प्रदिश उद्दिशो नऽआपो विश्वतः परिपांतु सर्वतः शांतिः शांतिः शांतिः ॥

नारायण नारायण गॊविंद हरी
नारायण नारायण गॊविंद ॥प॥
नारायण गॊविंद गॊविंद मुकुंद परतर परमानंद ॥अप॥

(बदरि, पंढरि, उडुपि, रंग, तिरुमल, वेंकट)
मोदलु मत्स्यनागि उदिसि सॊमन
सदेदु वेदगळ तंद ।
मंदरधर ता सिंधुविनोळमृत
तंदु भक्तरिगे उणलेंद

नारायण नारायण गॊविंद
हरि नारायण नारायण गॊविंद
मत्स्य नारायण नारायण गॊविंद
कूर्म नारायण नारायण गॊविंद

भूमिय कद्दा खळन मर्दिसि
आ महासतियेळ तंद
दुरुळ हिरण्यन करुळु बगेदु तन्न
कोरळोळगिट्टा बगेयिंदा

नारायण नारायण गॊविंद
हरि नारायण नारायण गॊविंद
वराह नारायण नारायण गॊविंद

नरहरि नारायण नारायण गॊविंद

पुट्टनागि महिकोट्ट बलिय तले
मेट्टि तुळिद दयदिंद
धात्रियोळु मुनि पुत्रनागि बंदु
क्षत्रियरेल्लर कोंद

नारायण नारायण गॊविंद
हरि नारायण नारायण गॊविंद
वामन नारायण नारायण गॊविंद
भार्गव नारायण नारायण गॊविंद

मडदिगागि सरगडलने कट्टि
हिडिदु रावणन कोंद
गॊकुलदि पुट्टि गॊवळने काय्द
गॊपालकृष्ण ता बंद

नारायण नारायण गॊविंद
हरि नारायण नारायण गॊविंद
राम नारायण नारायण गॊविंद
कृष्ण नारायण नारायण गॊविंद

छलदलि त्रिपुरर सतियर व्रतद

फलवनळिद मुददिंद
धरेयोळु परमा नीचर सवरि
कुदुरेयेरिद कल्कि चंद

नारायण नारायण गॊविंद
हरि नारायण नारायण गॊविंद
बुद्ध नारायण गॊविंद
कल्कि नारायण गॊविंद

दॊषदूर श्री पुरंदर विठल
पॊषित भक्त सुवृंद ॥

बिडेनॊ निन्नंघ्रि श्रीनिवास, एन्न दुडिसिकोळळेलॊ श्रीनिवास
निन्नुडियॆ जितल्लॊ श्रीनिवास,
एन्न नडे तप्पु कायॊ श्रीनिवास ॥प॥

बडियॊ बेन्नल्लि श्रीनिवास
नन्नोडल होय्यदिरो श्रीनिवास
ना–बडव काणेलॊ श्रीनिवास,
निन्नोडल होक्केनो श्रीनिवास ॥ १ ॥

पंजु विडिवेनो श्रीनिवास निन्– एंजल
बळिदुंबे श्रीनिवास

नासंजे उदयके श्रीनिवास ,
काळंजेय पिडिवे श्रीनिवास ॥ २ ॥

सत्तिगे चामर श्रीनिवास
ना–नेत्ति कुणिवेनॊ श्रीनिवास
निन्न –रत्नद हाविगे श्रीनिवास ,
ना–होत्तु नलिवेनॊ श्रीनिवास ॥ ३ ॥

हेळिदंतालिहे श्रीनिवास
निन्नाळिगळागिहे श्रीनिवास
अव–रूळिगव माळपे श्रीनिवास,
नन्न पालिसॊ बिडदे श्रीनिवास ॥ ४ ॥

निन्न नाम हॊळिगे श्रीनिवास ।
कळळ– कुन्नि नानागिहे श्रीनिवास
कट्टि–निन्नवरोद्दरे श्रीनिवास ,
ननगिन्नु लज्जेतके श्रीनिवास ॥ ५ ॥

बीसि कोळळलवरे श्रीनिवास,
मुद्रे कासि चुच्चलवरे श्रीनिवास
मिक्क घासिगे नानंजेनय्य श्रीनिवास
एंजलासेय भंट ना श्रीनिवास ॥ ६॥

हेसि नानाधरे श्रीनिवास ,
हरि–धासरोळु पोक्के श्रीनिवास
अवर–भाषेय कैळिहे श्रीनिवास ,
आवासिय सैरिसो श्रीनिवास ॥ ७ ॥

तिंगळवनल्ल श्रीनिवास ,
वत्स–रंगळवनल्ल श्रीनिवास
राजंगळ सवदिपे श्रीनिवास ,
भवंगळ धाटुवे श्रीनिवास ॥ ८ ॥

निन्नव निन्नव श्रीनिवास,
नानन्यरनरियेनो श्रीनिवास
अय्य– मन्निसॊ तायंदे श्रीनिवास
प्रसन्न वेंकटाद्रि श्रीनिवास ॥ ९ ॥

श्री श्रीनिवासा गॊविंदा
श्री वेंकटेशा गॊविंदा
भक्तवत्सला गॊविंदा
भागवतप्रिय गॊविंदा
गॊविंदा हरि गॊविंदा
गॊकुलनंदन गॊविंदा ॥ १ ॥

नित्यनिर्मला गॊविंदा

नीलमेघश्याम गोविंदा
पुराणपुरुषा गोविंदा
पुंडरीकाक्ष गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ २ ॥

नंदनंदना गोविंदा
नवनीतचोरा गोविंदा
पशुपालक श्री गोविंदा
पापविमोचन गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ ३ ॥

दुष्टसंहार गोविंदा
दुरितनिवारण गोविंदा
शिष्टपरिपालक गोविंदा
कष्टनिवारण गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ ४ ॥

वज्रमकुटधर गोविंदा
वराहमूर्तिवि गोविंदा
गोपीजनप्रिय गोविंदा

गोवर्धनोद्धार गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ ५ ॥

दशरथनंदन गोविंदा
दशमुखमर्दन गोविंदा
पक्षिवाहना गोविंदा
पांडवप्रिय गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ ६ ॥

मत्स्यकूर्म गोविंदा
मधुसूधन हरि गोविंदा
वराह नरसिंह गोविंदा
वामन भृगुराम गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ ७ ॥

बलरामानुज गोविंदा
बौद्ध कल्किधर गोविंदा
वेणुगानप्रिय गोविंदा
वेंकटरमणा गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा

गोकुलनंदन गोविंदा ॥ ८ ॥

सीतानायक गोविंदा
श्रितपरिपालक गोविंदा
श्रितजनपोषक गोविंदा
धर्मसंस्थापक गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ ९ ॥

अनाथरक्षक गोविंदा
आपद्भांदव गोविंदा
भक्तवत्सला गोविंदा
करुणासागर गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ १० ॥

कमलदळाक्ष गोविंदा
कामितफलदात गोविंदा
पापविनाशक गोविंदा
पाहि मुरारे गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ ११ ॥

श्री मुद्रांकित गोविंदा
श्री वत्सांकित गोविंदा
धरणीनायक गोविंदा
दिनकरतेजा गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ १२ ॥

पद्मावतीप्रिय गोविंदा
प्रसन्नमूर्ती गोविंदा
अभयहस्त गोविंदा
मत्स्यावतार गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ १३ ॥

शंखचक्रधर गोविंदा
शार्ङ्गगदाधर गोविंदा
विराजातीर्धस्थ गोविंदा
विरोधिमर्धन गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ १४ ॥

सालग्राम[धर] गोविंदा
सहस्रनामा गोविंदा

लक्ष्मीवल्लभ गोविंदा
लक्ष्मणाग्रज गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ १५ ॥

कस्तूरितिलक गोविंदा
कनकांबरधर गोविंदा
गरुडवाहना गोविंदा
गजराज रक्षक गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ १६ ॥

वानरसेवित गोविंदा
वारधिबंधन गोविंदा
ऐकस्वरूप गोविंदा
रामकृष्णा गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ १७ ॥

भक्तनंदन गोविंदा
प्रत्यक्षदेवा गोविंदा
परमदयाकर गोविंदा
वज्रकवचधर गोविंदा

गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ १८ ॥

वैजयंतिमाल गोविंदा
वड्डिकासुल गोविंदा
वसुदेवसुत गोविंदा
श्रीवासुदेव गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ १९ ॥

नित्यकळ्याण गोविंदा
नीरजनाभ गोविंदा
नीलाद्रिवास गोविंदा
नीलमेघश्याम गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ २० ॥

स्वयं प्रकश गोविंदा
आनम्दनिलय गोविंदा
स्रीदेविनाठ गोविंदा
देवकि नंदन गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ २१ ॥

तिरुमलवास गोविंदा
रत्नकिरीट गोविंदा
आश्रितपक्ष गोविंदा
नित्यशुभप्रद गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ २२ ॥

आनंदरूप गोविंदा
आद्यंतरहित गोविंदा
इहपर दायक गोविंदा
इभराज रक्षक गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ २३ ॥

पद्मदलाक्ष गोविंदा
तिरुमलनिल्य गोविंदा
शेषशायिनी गोविंदा
शेषाद्रिनिलय गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ २४ ॥

वराह रूप गोविंदा

श्री खूर्मरूप गोविंदा
वामन रूप गोविंदा
नरहरि रूप गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ २५ ॥

श्री परशुराम गोविंदा
श्री बलराम गोविंदा
रघुकुल राम गोविंदा
श्री रामकृष्ण गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ २६ ॥

तिरुमलनायक गोविंदा
श्रितजनपोषक गोविंदा
श्रीदेविनाठ गोविंदा
श्रीवत्सांकित गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ २७ ॥

गोविंदानाम गोविंदा
वेंकटरमणा गोविंदा
क्षेत्रपालक गोविंदा

तिरुमलनथ गोविंदा ।
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ २८ ॥

वानरसेवित गोविंदा
वारधिबंधन गोविंदा
ऐडुकोंडलवाड गोविंदा
ऐकत्वरूपा गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ २९ ॥

श्री रामकृष्णा गोविंदा
रघुकुल नंदन गोविंदा
प्रत्यक्षदेवा गोविंदा
परमदयाकर गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ ३० ॥

वज्रकवचधर गोविंदा
वैजयंतिमाल गोविंदा
वड्डिकासुलवाड गोविंदा
वसुदेवतनया गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा

गोकुलनंदन गोविंदा ॥ ३१ ॥

बिल्वपत्रार्चित गोविंदा
भिक्षुक संस्तुत गोविंदा
स्त्रीपुंसरूपा गोविंदा
शिवकेशवमूर्ति गोविंदा
ब्रह्मांडरूपा गोविंदा
भक्तरक्षक गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ ३२ ॥

नित्यकळयाण गोविंदा
नीरजनाभ गोविंदा
हातीरामप्रिय गोविंदा
हरि सर्वोत्तम गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ ३३ ॥

जनार्धनमूर्ति गोविंदा
जगत्साक्षिरूपा गोविंदा
अभिषेकप्रिय गोविंदा
आपन्निवारण गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा

गोकुलनंदन गोविंदा ॥ ३४ ॥

रत्नकिरीटा गोविंदा
रामानुजनुत गोविंदा
स्वयंप्रकाशा गोविंदा
आश्रितपक्ष गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ ३५ ॥

नित्यशुभप्रद गोविंदा
निखिललोकेशा गोविंदा
आनंदरूपा गोविंदा
आद्यंतरहिता गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ ३६ ॥

इहपर दायक गोविंदा
इभराज रक्षक गोविंदा
परमदयाळो गोविंदा
पद्मनाभहरि गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ ३७ ॥

तिरुमलवासा गोविंदा
तुलसीवनमाल गोविंदा
शेषाद्रिनिलया गोविंदा
शेषसायिनी गोविंदा
श्री श्रीनिवासा गोविंदा
श्री वेंकटेशा गोविंदा
गोविंदा हरि गोविंदा
गोकुलनंदन गोविंदा ॥ ३८ ॥

साटियुंटे श्रीनिवासन दास कूटद म्याळके
बूटकद मातल्ल केळिरो भजने माडुव ताळके ।प।

वासुदेवन वर्णिसलु कमलासनादि सुरेंद्ररु
दास जनर समूहदळोगावासवागुत नलिवरु
सूसुतिह गंगादि नदिगळु ब्यासरदे बंदिरुवुवु
केशवन कोंडाट धरेयोळु मीसलळियद मधुरवु । १ ।

बारिसुत तंबूरि ताळव नारदर संस्मरिसुत
भूरि किंकिणि मद्दळेय शृंगार रसवनु सुरिसुत
वारिजाक्षन परम मंगळ मूरुतिय मुंदिरिसुत
मारुतन मतवरितु बहु गंभीर स्वरदिंदरुहुत । २ ।

हिंदेगळिसिद हलवु दुरितवु कुंदुवुदु निमिषार्धदि
अंदिनंदिन दॊष दुष्कृत ओंदु निल्लदु कडेयलि
इंदिराधव शॆषभूधर मंदिरनु मह हरुषदि
मुंदे नलिवुत मनके पूर्णानंदवीवनु नगुतलि । ३ ।

वारिज लयपते वारिजनाभने ,
वारिजभवपित वारिजनॆत्रने
वारिजमित्र अपारप्रभावने ,
वारिजजांडद कारणदोरेयॆ
बारैय्य बा बा बा बाबा (५)
भकुथरप्रिया श्रीनिवासराय ॥

मारजनकमुकुतारोडेय , दॆवैय्य जीय्य
बारैय्य बाबाबाबाबाबाबाबा (९)
भकुथरप्रिया श्रीनिवासराय।

स्यंदनवॆरिबाप्पा रंग ,
दॆवॊत्तुंगा नंदा नंदन अरिमदभंग,
करुणापांग सिंधु,, शयन सुंदरांग
हे नारसिंग ।
कंदविरंचियु नंदिवाहन
अमरेंद्र सनक, सनं-दनादिमुनि वृंद निंदुबंदु धिं धिं धिमिकेंदु
निंदाडलु आनंददि मनेगे ॥१॥

बारैय्य बाबाबाबाबाबाबाबाबा(९) ॥

जग्गज्जन्मा दि कर्तागॊविंदा उदरदिलॊक लगुवागिधरिसीदा मुकुंद
भक्तर मनके, झगझगिसुत पोळेवानंद, निगमावळियिंद
अगणित मुनिगळु नग खग मृग शशि
गगनमन्याद्यरु सोगसागि
बगेबगे पॊगळुतलि बॆग जिगिजिगिदाडलु
मुगुळुनगेय मह उरग गिरिवास ॥२॥

बारैय्य बाबाबाबाबाबाबाबा(९)
भकुथरप्रिया श्रीनिवासराय

तडमाडब्याडवॊ हे नल्ल,
वाकुलालिसेन्नॊडेय गॊपालविठल
दॆव पराकु अडि इडु भक्तवत्सल श्री लकुमी नल्ल,
मडुविनोळगे गज मोरेयिडलाक्षण
मडदिगे हॆळदे दुडदुडने बंदु
हिडिदु नक्रन बाय कडिदु बिडिसिदने
सडगरदलि रमे पोडवि ओडगूडि ॥३॥

बारैय्य बाबाबाबाबाबाबाबा(९)
भकुथरप्रिया श्रीनिवासराय॥
वारिज लयपते वारिजनाभने ,

वारिजभवपित वारिजनेत्रने
वारिजमित्र अपारप्रभावने ,
वारिजजांडद कारणदोरेये, बारैय्य बा (५)
भकुथरप्रिया श्रीनिवासराय ,श्रीनिवासराय, हे श्रीनिवासराय ॥

जै जै राम हरे जै जै कृष्ण हरे ॥
राम राम हरे कृष्ण कृष्ण हरे ॥

कौसल्यज वर वंशोद्भव सुर
संसेवित पद राम हरे
कंसाद्यसुरर ध्वंसगैद यदु
वंशोद्भव श्री कृष्ण हरे ॥१॥

मुनिमख रक्षक दनुजर शिक्षक
फणिधर सन्नुत राम हरे
घनवर्णांग सुमनसरोडेय
श्री वनजासन पित कृष्ण हरे ॥२॥

ताटकि खरमधुकैटभारि
पापाटवि सुरमुख राम हरे
आटदि फणि म्याल् नाट्यवनाडिद
खेटवाह श्री कृष्ण हरे ॥ ३॥

शिलेय पादरजदलि स्त्री माडिद
सुललित गुननिधि राम हॆरे
बलु वक्रागिद्द अबलेय क्षणदलि
चेलुवेय माडिद कृष्ण हॆरे ॥४॥

हर धनु भंगिसि हरुषदि जानकि
करव पिडिद श्री राम हॆरे
सिरि रुक्मिणियनु त्वरदलि वरिसिद
शरणर पालक कृष्ण हॆरे ॥५॥

जनक पॆळे लक्ष्मण सीता सह
वनके तेरळिद राम हॆरे
वनके पॊगि तन्नणुगरोडने
गॊवनु पालिप श्री कृष्ण हॆरे ॥६॥

चदुरे शबरियित्त बदरिय फलवनु
मुददि सॆविसिद श्री राम हॆरे
विदुरन क्षीरके ओदगिपॊद
पदुमनाभ श्री कृष्ण हॆरे ॥७॥

सॆवित हनुम सुग्रीवन सख
जगत्पावन परतर राम हॆरे
दॆवकि वसुदॆवर सेरे बिडिसिद

दॆव दॆव श्री कृष्ण हॆरे ॥८॥

धरेयोळगज्ञजनर मॊहिपुदके
हरन पूजिसिद श्री राम हॆरे
हरन प्रार्थिसि वरवनु पडेद
चरिते अगाधवु कृष्ण हॆरे ॥९॥

गिरिगळिंदवर शरधिय बंधिसिद
परम समर्थ श्री राम हॆरे
गिरियनु तन्न किरि बेरळलेत्ति
गॊपरन काय्द श्री कृष्ण हॆरे ॥१०॥

खंडिसि दशशिर चेंडाडिद
कॊदंडपाणि श्री राम हॆरे
पांडु तनयरिं चंड कौरवर
दिंडु गेडहिद कृष्ण हॆरे ॥११ ॥

तवकदल् अयॊध्यापुरकैदिद
तन्न युवतियोडने श्री रामहॆरे
रविसुततनयगे पट्टव कट्टिद
भवतारक श्री कृष्ण हॆरे ॥१२॥

भरतनु प्रार्थिसलरसत्ववव

स्वीकरिसिद त्वरदलि राम हरे
वरधर्माद्यर धरेयोळु मेरेसिद
परम कृपाकर कृष्ण हरे ॥१३॥

अतुळ महिम सद् यतिगळ हृदयदि
सतत विराजिप राम हरे
सितवाहन सारथियेनिसिद सुरतति
पूजित पद कृष्ण हरे ॥ १४॥

रामराम एंदु नेमदि भजिपर
कामितफलद श्री राम हरे
प्रेमदि भक्तर पालिप श्री
वरदेश विठल श्री कृष्ण हरे ॥१५॥

नंदेनदो स्वामि निंदे इदेल्लवू ॥प॥
नंदनंदन गोविंद, हरे कृष्ण ॥अ.प॥

जनन मरण निंदे, जन्मसाधन निंदे
अनुकूलादरवु निंदे स्वमी
तनुमनवू निंदे, काय दोरेवुदू निंदे
चिनुमयरूपने अनुमानव्यातके ॥१॥

कायकष्टवु निंदे, देहद बल निंदे

न्याय अन्यायवू निंदे,
बायिमातु निंदे, बरुव भाग्यवु निंदे
कायज पित निन्न माया तिळियदय्या ॥२॥

यात्रे तीर्थवु निंदे, क्षेत्रद फल निंदे
सत्पात्र दान नेम निंदे,
धात्रियोळ् परिपूर्ण क्षेत्र वेंकटविठल
स्तोत्र माळ्पुदु विचित्र निन्नदय्या ॥३॥

Preenayamo

वंदिताशेषवंद्यौरुवृंदारकं
चंदनाचर्चितो दारपीनांसकम् ।
इंदिराचंचलापांगनीराजितं
मंदरोद्धारि वृत्तोद्भुजाभोगिनं ।

प्रीणयामो वासुदेवं देवतामंडला
खंडमंडनं प्रीणयामो वासुदेवं ॥ १ ॥

सृष्टिसंहारलीलाविलासाततं
पुष्टषाड्गुण्य सद्विग्रहोल्लासिनम् ।
दुष्ट निषेषसंहारकमोद्यतं
हृष्टपुष्टानुतिशिष्ट प्रजासंश्रयं ।

प्रीणयामॊ वासुदॆवं दॆवतामंडला
खंडमंडनं प्रीणयामॊ वासुदॆवं ॥ २ ॥

उन्नतप्रार्थिताशॆषसंसाधकं
सन्नतालौकिका नंदद श्रीपदम् ।
भिन्नकर्माशयप्राणिसंप्रॆरकं
तन्नकिंनॆति विद्वत्सु मिमांसितं ।

प्रीणयामॊ वासुदॆवं दॆवतामंडला
खंडमंडनं प्रीणयामॊ वासुदॆवं ॥ ३ ॥

विप्रमुख्यैः सदावॆदवादॊन्मुखैः
सुप्रतापैः क्षीतिशॆश्वरैश्चार्चितं ।
अप्रतर्क्यॊरुसंविद्गुणं निर्मलं
सप्रकाशाजरानंद रूपंपरं ।

प्रीणयामॊ वासुदॆवं दॆवतामंडला
खंडमंडनं प्रीणयामॊ वासुदॆवं ॥ ४ ॥

अत्ययॊ यस्यकॆनापिनक्कापिहि
प्रत्यतॊ यद्गुणॆषूत्तमानांपरः ।
सत्यसंकल्प ऐकॊ वरॊण्यॊ वशी
मत्यनूनैः सदा वॆदवादॊदितः ।

प्रीणयामॊ वासुदॆवं दॆवतामंडला
खंडमंडनं प्रीणयामॊ वासुदॆवं ॥ ५ ॥

पश्यतां दुःखसंताननिर्मूलनं
दृश्यतां दृश्यतामित्य जॆशार्च्चितम्
नश्यतां दूरगं सर्वदाप्यात्मगं
पश्यतां स्वॆच्छया सज्जनॆष्वागतं ।

प्रीणयामॊ वासुदॆवं दॆवतामंडला
खंडमंडनं प्रीणयामॊ वासुदॆवं ॥ ६ ॥

अग्रजं यः ससर्जाजमग्र्याकृतिं
विग्रहॊयस्य सर्वॆगुणा ऎव हि ।
उग्र आद्यॊऽपि यस्यात्मजाग्र्यात्मजः
सद्गृहीतः सदा यः परंदैवतम् ।

प्रीणयामॊ वासुदॆवं दॆवतामंडला
खंडमंडनं प्रीणयामॊ वासुदॆवं ॥ ७ ॥

अच्युतॊ यॊ गुणैर्नित्यमॆवाखिलैः
प्रच्युतॊऽशॆष दॊषैः सदापूर्तितः ।
उच्यतॆ सववॆदॊरु वादैरजः स्वर्चितो

ब्रह्मरुद्रेंद्र पूर्वैस्सदा ।

प्रीणयामॊ वासुदेवं देवतामंडला
खंडमंडनं प्रीणयामॊ वासुदेवं ॥ ८ ॥

धार्यते येन विश्वं सदाजादिकं
वार्यते.अशेषदु:खं निजध्यायिनां ।
पार्यते सर्वमन्यैर्नयत्पार्यते
कार्यते चाखिलं सर्वभूतै: सदा ।

प्रीणयामॊ वासुदेवं देवतामंडला
खंडमंडनं प्रीणयामॊ वासुदेवं ॥ ९ ॥

सर्वपापानि यत्संस्मृते: संक्षयं
सर्वदा यांति भक्त्या विशुद्धात्मनां ।
शर्वगुर्वादिगीर्वाण संस्थानद:
कुर्वते कर्म यत्प्रीतये सज्जना: ।

प्रीणयामॊ वासुदेवं देवतामंडला
खंडमंडनं प्रीणयामॊ वासुदेवं ॥ १० ॥

अक्षयं कर्म यस्मिन् परे स्वर्पितं
प्रक्षयं यांति दु:खानि: यन्नामत: ।

अक्षरोयोऽजरः सर्वदैवामृतः
कुक्षिगं यस्य विश्वं सदाजादिकम् ।

प्रीणयामो वासुदेवं देवतामंडला
खंडमंडनं प्रीणयामो वासुदेवं ॥ ११ ॥

नंदितीर्थोरुसन्नामिनो नंदिनः
संदधानः सदानंददेवे मतिम् ।
मंदहासारुणा पांग दत्तोन्नतिं
नंदिता शेषदेवादि वृंदं सदा ।

प्रीणयामो वासुदेवं देवतामंडला
खंडमंडनं प्रीणयामो वासुदेवं ॥ १२ ॥

तृतीयं स्तोत्रम्
कुरु भुंक्ष्व च कर्म निजं नियतं हरिपाद विनम्र धिया सततम् ।
हरिरेव परो हरिरेवगुरु हरिरेव जगत्पितृ मातृगतिः ॥ १ ॥

नततोऽस्तै परं जगदीड्य तमं परमात् परतः पुरुषोत्तमतः ।
तदलं बहुलोक विचिंतनया प्रणवं कुरु मानसमीश पदे ॥ २ ॥

यततोऽपि हरेः पद संस्मरणे सकलं ह्यघमाशु लयं व्रजति ।
स्मरतस्तु विमुक्ति पदं परमं स्पुट मेष्यति तत् किम पाक्रियते ॥ ३ ॥

शृणु तामल सत्यवचः परमं शपथैरित मुच्छ्रित बाहु युगम् ।
नहरेः परमो नहरेः सदृशः परमः सतुसर्व चिदात्मगणात् ॥ ४ ॥

यदि नाम परो न भवेत् स हरिः कथमस्य वशे जगदेतदभूत् ।
यदि नाम न तस्य वशे सकलं कथमेव तु नित्य सुखं न भवेत् ॥ ५ ॥

न च कर्म विमामल कालगुण प्रभृतीशम चित्तनु तद्दि यतः ।
चिदचित्तनु सर्वमसौ तु हरिर्यमये दिति वैदिकमस्ति वचः ॥ ६ ॥

व्यवहारभिदाऽपि गुरोर्जगतां न तु चित्तगता सहि चोद्यपरम् ।
बहवः पुरुषाः पुरुषप्रवरो हरिरित्यवदत् स्वयमेव हरिः ॥ ७ ॥

चतुरानन पूर्व विमुक्त गणा हरिमेत्य तु पूर्व वदेव सदा ।
नियतोद्यविनीचत यैव निजां स्थितिमापुरिति स्म परं वचनम् ॥ ८ ॥

आनंदतीर्थ सन्नाम्ना पूर्ण प्रज्ञाभि धायुजा ।
कृतं हर्यष्टकं भक्त्या पठतः प्रीयते हरिः ॥ ९ ॥

॥इतिश्रीमदानंदतीर्थ भगवत्पादाचार्य विरचितेषु द्वादशस्तोत्रेषु तृतीय स्तोत्रम्॥

मत्स्यकरूप लयोदविहारिन् वेदविनेत्र चतुर्मुखवन्द्य ।
कूर्मस्वरूपक मन्दरधारिन् लोकविधारक देववरेण्य ॥ १॥

सूकररूपक दानवशत्रो भूमिविधारक यज्ञावरांग ।
देव नृसिंह हिरण्यकशत्रो सर्व भयान्तक दैवतबन्धो ॥ २॥

वामन वामन माणववेष दैत्यवरान्तक कारणरूप ।
राम भृगूद्वह सूर्जितदीप्ते क्षत्रकुलान्तक शम्भुवरेण्य ॥ ३॥

राघव राघव राक्षस शत्रो मारुतिवल्लभ जानकिकान्त ।
देवकिनन्दन नन्दकुमार वृन्दावनांचन गोकुलचन्द्र ॥ ४॥

कन्दफलाशन सुन्दररूप नन्दितगोकुलवन्दितपाद ।
इन्द्रसुतावक नन्दकहस्त चन्दनचर्चित सुन्दरिनाथ ॥ ५॥

इन्दीवरोदर दळनयन मन्दरधारिन् गोविन्द वन्दे ।
चन्द्रशतानन कुन्दसुहास नन्दितदैवतानन्दसुपूर्ण ॥ ६॥

देवकिनन्दन सुन्दररूप रुक्मिणिवल्लभ पांडवबन्धो ।
दैत्यविमोहक नित्यसुखादे देवविबोधक बुद्धस्वरूप ॥ ७॥

दुष्टकुलान्तक कल्किस्वरूप धर्मविवर्धन मूलयुगादे ।
नारायणामलकारणमूर्ते पूर्णगुणार्णव नित्यसुबोध ॥ ८॥

आनन्दतीर्थकृता हरिगाथा पापहरा शुभनित्यसुखार्था ॥ ९॥

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्य विरचितं
द्वादशस्तोत्रेषु षष्ठस्तोत्रं सम्पूर्णम्

श्री वादिराज तीर्थ विरचित श्री श्रीनिवास कल्याण ॥

स्त्रीयरेल्लरू बन्नीरि , श्रीनिवासन पाडिरे
ज्ञानगुरुगळिगोंदिसि , मुंदे कथेय पेळुवे॥प॥

गंगातीरदि ऋषिगळु , अंदु यागव माड्दरु
बंदु नारद निंतुकोंडु यारिगेंदु, केळलु
अरितु बरबेकु एंदु , आ मुनियु तेरळिद, भृगुमुनियु तेरळिद
नंदगोपन मगन कंदन , मंदिरक्कागे बंदनु

वेदगळने ओदुता , हरियनू कोंडाडुता
इरुव बोम्मन नोडिद , कैलासक्के बंदनु
कंबुकंठनु पार्वतियू , कलेतिरुवुद कंडनु
सृष्टियोळगे निन्न लिंग शेष्ठवागलेंदनु
वैकुंठक्के बंदनु , वारिजाक्षन कंडनु

केट्टकोपदिंद ओद्दरे , एष्टुनोंदितेंदनु
थट्टने बिसिनीरिनिंद , नेट्टगे पाद तोळेदनु

बंद कार्य आयितेंदु , अंदु मुनियु तेरळिद
बंदु निंदु सभेयोळगे , इंदिरेशन होगळिद
पतिय कूडे कलह माडि , कोल्हापुरक्के हॊदळु
सतियु पॊगे पतियु होरटु , गिरिगे बंदु सॆरिद
हुत्तदल्लॆ हत्तुसाविर वरुष गुप्तवागिद्द

ब्रह्म धॆनुवादनु , रुद्रवत्सनादनु
धॆनु मुंदे माडिकोंडु , गॊपि हिंदे बंदळु
कॊटि होन्नु बाळुवॊदु , कोडद हालु करेवुदु
प्रीतियिंदलि तन्न मनेगे , तंदुकोंडनु चॊळनु

ओंदु दिवस कंदग् हालु चंददिंदल्लि कोडलिल्ल
अंदु रायन मडदि कॊपिसि , बंदु गॊपन होडेदळु
धॆनु मुंदे माडिकोंडु , गॊप हिंदे नडेदनु
कामधॆनु करेद हालु , हरिय शिरके बिद्दितु
इष्टु कष्ट बंदितेंदु , पेट्टु बडिये हॊदनु
कृष्ण तन्न मनदल्ल्यॊचिसि , कोट्ट तन्न शिरवनु
ऎळु ताळेमरद उद्द , ऎकवागि हरियितु
रक्तवन्नु नॊडि गॊप , मत्ते स्वर्गक्केरिद
कष्टवन्नु नॊडि गॊवु , अष्टु बंद् हेळितु
थट्टने राय एद्दु गिरिगे , बंदु बॆग सॆरिद
ऎनु कष्ट इल्लि हीगे , याव पापि माडिद,
इष्टु कष्ट कोट्टवागे , भ्रष्टपिशाचियागेंद

पेट्टु वेदने ताळलारदे , बृहस्पतिय करेसिद

अरुण उदयदल्लेद्दु , औषधक्के पॊदनु
क्रॊढरूपिय कंडनु , कूडि मातनाडिदनु
इरुवुदक्के स्थळवु एनगे , ऎर्पाडागबेकेंद
नूरुपाद भूमि कोट्टरे , मोदलु पूजे निमगेंद
पाकपक्क माडुवुदक्के , आके बकुळे बंदळु
भानुकॊटितेजनीग , बेटेयाड होरटनु

मंडे बाचि दोंडे हाकि , दुंडुमल्लिगे मुडिदनु
हारपदक कोरळल् हाकि , फणेगे तिलकविट्टनु
अंगुलिगे उंगुर , रंगशृंगारवादवु
पट्टेनुट्टु कच्चे कट्टि , पीतांबरव होद्दनु
ढाळु कत्ति उडियल् सिक्कि , जॊडू कालल्लि मेट्टिद
करदि वीळयवन्ने पिडिदु , कन्नडीय नॊडिद
कनकभूषणवाद तोडेगे , कमलनाभ तोट्टनु
कनकभूषणवाद कुदुरे , कमलनाभ ऎरिद

करिय हिंदे हरियु बरलु , कांतरेल्ल कंडरु
यारु इल्लि बरुवरेंदु दूर पॊगिरेंदरु
नारियरिरुव स्थळक्के , याव पुरुष बरुवनु
ऎष्टु हेळे केळ कृष्ण , कुदुरे मुंदे बिट्टनु
अष्टू मंदिरेल्ल सेरि , पेट्टुगळनु होडेदरु

कल्लुमळेय करेदराग , कुदुरे केळगे बिद्दितु

कॆश बिच्चि वासुदॆव , शॆषगिरिगे बंदनु
परमान्न माडिद्दॆने , उण्णु बॆग एंदळु
अम्म एनगे अन्न बॆड , एन्न मगन वैरियॆ
कण्णिल्लाद दैव अवळ , निर्माणव माडिद
याव दॆश यावॊळाके , एनगे पॆळु एंदळु

नारायणन पुरके पॊगि , रामकृष्णर पूजिसि
कुंजमणिय कोरळल् हाकि , कूसिन् कोंकळदॆत्तिदा
धरणिदॆविगे कणिय कॆळि , गिरिगे बंदु सॆरिद
कांतरेल्ल कूडिकोंडु , आग बकुळे बंदळु

बन्निरम्म सदनकेनुत , बहळ मातनाडिदरु
तंदेतायि बंधुबळग , होन्नु हण उंटेंदरु
इष्टु परियल्लिद्दवगे , कन्ये याके दोरकिल्ला
दोड्डुवळिगे मक्कळिल्ल , मत्ते मदुवे माड्वेवु
बृहस्पतीय करेसिद , लग्नपत्रिके बरेसिद
शुकाचार्यर करेसिद , मदुवे ऒले बरेसिद

वल्लभॆन करेवुदक्के , कोल्हापुरक्के पॊदरु
गरुडन् हेगलनॆरिकोंडु , बॆग होरटुबंदरु
अष्टवर्गवन्नु माडि , इष्ट दॆवर पूजिसि

लक्ष्मीसहित आकाशराजन , पट्टणक्के बंदरु
कनकभूषणवाद तोडुगे , कमलनाभ तोट्टनु
कनकभूषणवाद मंटप , कमलनाभ ऎरिद

कमलनाभगे कांतिमणिय , कन्यादानव माडिद
कमलनाभ कांते कैगे , कंकणवन्नॆ कट्टिद
श्रीनिवास पद्मावतिगे , मांगल्यवने कट्टिद
श्रीनिवासन मदुवे नॊडे , स्त्रीयरेल्लरु बन्निरॆ
पद्मावतिय मदुवे नॊडे , मुद्दु बालेयर् बन्निरॆ
शंकेयिल्लदे हणव सुरिदु , वॆंकटॆशन कळुहिद

लक्षतप्पु एन्नल्लुंटु , पक्षिवाहन सलहेन्न
कॊटितप्पु एन्नल्लुंटु , कुसुमनाभ सलहेन्न
शंके इल्लदे वरव कोडुव , वॆंकटॆश सलहेन्न
भक्तियिंदलि हॆळ् कॆळदवरिगे , मुक्ति कोडुव हयवदन ॥

जय जय श्रीनिवासनिगे , जय जय पद्मावतिगे
ओलिदंतह श्रीहरिगे , नित्य शुभमंगळ
शॆषाद्रिगिरिवास , श्रीदॆवि अरसगे
कल्याणमूर्तिगे , नित्यजयमंगळ ॥

श्री गुरु जगन्नाथ दासर
॥ श्री वॆंकटॆश स्तवराज ॥

श्रीरमण सर्वेश सर्वद ।
सारभौक्त स्वतंत्र सर्वद ।
पार महिमौदार सद्गुण पूर्ण गंभीर ॥
सारिदवरघ दूरगैसि ।
सूरिजनरिगे सौख्य नीडुव ।
धीर वेंकटरमण करुणदि पोरेयो नी एन्न ॥ १ ॥

घन्नमहिमा पन्नपालक । निन्नहोरतिन्नन्यदेवर ।
मन्नदलि ना नेनेसेनेंदिगु बन्न बडिसदिरु ।
एन्नपालक नीने इरुतिरे
इन्नु भव भयवेके एनगे ।
चेन्न वेंकटरमण करुणदि पोरेयो नी एन्न ॥ २ ॥

लकुमि बोम्म भवामरेशरु ।
भकुति पूर्वक निन्न भजिसि
सकल लोकके नाथरेनिपरु सर्व कालदलि॥
निखिळ जीवर पोरेव देवने ।
भकुति नी येनगीयदिरलु
व्यकुतवाग्यपकीर्ति बप्पदो श्रीनिकेतनने ॥ ३ ॥

याके पुट्टदु करुण एन्नोळु ।
साकलारेय निन्न शरणन।

नूकिबिट्टरे निनगे लोकदि ख्याति बप्पुवुदे ॥
नोकनीयने नीने एन्ननु ।
जोकेयिंदलि कायो बिडदे ।
ऐकदेवनु नीने वेंकट शैषगिरिवास ॥ ४ ॥

अंबुजांबक निन्न पदयुग ।
नंबिकोंड ई परियलिरुतिरे ।
डोंबेगारन तेरदि नी निर्भाग्य स्तिति तोरे ॥
बिंब मूरुति निन्न करगत ।
कंबुवरवे गतियो विश्वकुटुंबि ।
एन्ननु सलहो संतत शैषगिरिवास ॥ ५ ॥

सारसिरि वैकुंठ त्यजिसि ।
धारुनियोळ् गोल्लनागि
चोर कर्मव माडि बदुकिह दारिगरिकिल्ल ॥
सारि पेळुवे निन्न गुणगळ ।
पारवागिरुतिहवो जनरिगे
धीर वेंकटरमण करुणदि पोरेयो नी येन्न ॥६ ॥

नीर मुळुगि भार पोत्तु ।
धारुणी तळवगेदु सिट्टिलि ।
क्रूरनुदरव सीळि करुळिन माले धरिसिदरु ॥
पोर विप्र कुठारि वनवन ।

चारि गॊप दिगंबराश्ववॆरि पॊदरु बिडेनॊ वॆंकट शॆषगिरिवास ॥७॥

लक्ष्मीनायक सार्वभौने ।
पक्षिवाहन परम पुरुषने ।
मोक्षदायक प्राणजनकने विश्व व्यापकने ॥
अक्षयांबरवित्तु विजयन ।
पक्षपातव माडि कुरुगळ लक्ष्य माडदे
कोंदेयॊ श्री शॆषगिरिवास ॥८॥

हिंदे नी प्रह्लादगॊसुग ।
एंदु नॊडद रूप धरिसि ।
बंदु दैत्यन ओडल बगेदु पोरेदे बालकन ॥
तंदेताग्गळ बिट्टु विपिनदि ।
निंदु तपिसुव पंचमत्सर ।
कंदना ध्रुवनिगॊलिदु पोरेदेयो शॆषगिरिवास ॥९॥

पिंतु मादिद महिमेगळ ना ।
नेंतु वर्णिसलॆनु फल श्रीकांत एन्ननु
पोरेये कीरुति निनगे फलवेनगे ॥
कंतु जनकने एन्न मनसिन ।
अंतरंगदि नीने सर्वद ।
निंतु प्रॆरणे माळपे सर्वद शॆषगिरिवास ॥१०॥

मडुविनोळगिह मकरिकालनु ।
पिडिदु बाधिसे करियु त्रिजग।
द्वडेय पालिसो एनलु तक्षण बंदु पालिसिदे ॥
मडदि मातनु कॆळि बलुपरि ।
बडव ब्राह्मण धान्य कोडलु ।
पोडविगसदळ भाग्य नीडिदे शॆषगिरिवास ॥११॥

श्रीनिवासने भक्तपॊषने ।
ज्ञानि कुलगळिगभयदायक ।
धीनबांदव नीने एन्न मनदर्थ पूरैसॊ ॥
अनुपमॊपमज्ञान संपद ।
विनय पूर्वकवित्तु पालिसो ।
जनुम जनुमके मरेय बॆडवॊ शॆषगिरिवास ॥ १२ ॥

मदवु मत्सर लॊभ मॊहवु ।
ओदगबारदु एन्न मनदलि ।
पदुमनाभने ज्ञान भक्तिविरक्ति नीनित्तु ।
हृदय मध्यदि निन्न रूपवु ।
वदनदलि तव नाममंत्रवु ।
सदय पालिसु बॆडिकोंबेनो शॆषगिरिवास ॥ १३ ॥

अंदनुडि पुसियागबारदु ।

बंद भाग्यवु पॊगबारदु ।
कुंदुबारदे निन्न करुणवु दिनदि वर्धिसलि ।
निंदे माडुव जनर संगवु ।
एंदिगादरु दोरेयबारदु ।
एंदु निन्ननु बॆडिकोंबेनो शॆषगिरिवास ॥ १४ ॥

ऍनु बॆडलि एन्न दॆवनॆ ।
सानुरागदि एन्न पालिसो ।
नाना विधविध सौख्य निडुवुदिह परंगळलि ।
श्रीनिवासने निन्न दासगे ।
ऍनु कोरेतिलेल्लि नॊडलु ।
नीनॆ निंतीविददि पॆळिसु शॆषगिरिवास ॥१५ ॥

आरु मुनिदवरॆनु माळपरो ।
आरु ओलिदवरॆनु माळपरो ।
आरुनॆहिगरारु द्वेशिगळारुदाशिनरु ॥
क्रूर जीवर हणिदु सात्विक ।
धीर जीवर पोरेदु निन्नलि ।
सार भकुतियनित्तु पालिसॊ शॆषगिरिवास ॥ १६ ॥

निन्न सॆवेयनित्तु एनगे ।
निन्न पदयुगभक्ति नीडि ।
निन्न गुणगण स्तवन माडुव ज्ञान नीनित्तु ।

एन्न मनदलि नीनॆ निंतु ।
घन्नकार्यव माडि माडिसु ।
धन्यनेंदेनिसेन्न लॊकदि शॆषगिरिवास ॥ १७ ॥

जय जयतु शठ कूर्मरूपने ।
जय जयतु किट सिंह वामन ।
जय जयतु भृगुराम रघुकुलसॊम श्रीराम ॥
जय जयतु सिरि यदुवॆरेण्यने ।
जय जयतु जनमॊह बुद्धने ।
जय जयतु कलिकल्मशघ्नने कल्किनामकने ॥ १८ ॥

करुणसागर नीनॆ निजपद ।
शरणवत्सल नीनॆ शाश्वत ।
शरण जनमंदार कमला कांत जयवंत ।
निरुत निन्ननु नुतिसि पाडुवे ।
वरद गुरु जगन्नाथविठ्ठल ।
परम प्रॆमदि पोरेयो एन्ननु शॆषगिरिवास ॥ १९ ॥

बॆग होरटा यॊगि वॆशदिंद श्री हरि
काशियात्रेयन्नु माडि बरुवेनेंदनु श्री हरि ॥

कावि वस्त्र उट्टु करदि कॊल पिडिदनॆ
कर्ण कुंडल होळेव पाद रक्षे धरिसिदा

अडिगडिगे बिडिमल्लिगे उदुरि बीळुत्ता
नडेदनु नारायण पुरद राजबीदियलि ॥१॥

कंडु गगनराय धरणिदेवि सहितलि
बंदु हरिय पादक्केरगि बेडिकोंडरू
मुद्दु पद्मावतिय कोट्टु मदुवे नडिसुवे
करेदु तंदराग प्रसन्न वेंकटेशनन्नु ॥२॥

कट्टिद मंगळसूत्रव देव ॥ प ॥

गट्टि गंटु हाकिद चित्रवु
परमेष्टि रुद्राद्यर स्तोत्रवु मत्ते
शिष्ट जनर दिव्य गानवु तानु
अष्टु केळुत संतुष्ट मनसिनिंद
बेट्टदोडेय जगजट्टि वेंकट रमण ॥ १ ॥

तुंबुरु नारदर गानवु,
दिव्य रंभे ऊर्वशीयर नाट्यवु
अल्लि तुंबिद सुरमुनि कूटवु
महासंभ्रम सभेयल्लि कंबु कंधरनिगे
अंबर वाणियु जय जय जयवेने ॥२॥

क्षौणिय राजादि राजरु तावु

माणिक्य मुत्तु रत्नराशिय पाद
काणिके कप्प तंदीवरु सिरि
वेणु विनोदनु जाणे पद्मावतिय
पाणिग्रहण कोंडु एणाङ्क कुल तिलक ॥३॥

अष्ट लकुमी पति तोषदि तन्न
इष्ट सुजनर मध्यदि
माव कोट्टु कन्यामणि कंठदि
अंदु अष्टदश वाद्यगळु
घट्टियागि मोरेयलु
शिष्ट प्रसन्न वेंकट विठ्ठल राय ॥४॥

वर वैकुंठदि बंदवगे
वरगिरियलि संचरिसुववगे
वरह देवन अनुसरिसि
स्वामि पुष्करणि तीरदल्लिरुववगे
मंगळं जय मंगळं १

सरसदि बेटेगे होरटवगे
सरसिजाक्षियळ कंडवगे
मरुळाटदि ता परवशनागुत
कोरवि वेष धरिसिरुववगे
मंगळं जय मंगळं २

गगन राज पुरक् हॊदवगे
बगे नुडिगळ नुडिदवगे
अगवासिगे निन्न मगळनु कोडु एंदु
गगन राजन सतिग् हॆळदवगे
मंगळं जय मंगळं ३

तन्न कार्य ता माड्दवगे
इन्नोब्बर हेसर् हॆळदवगे
मुन्न मदुवे निश्चयवागिरलु
तन्न बळग करेसिरुववगे
मंगळं जय मंगळं ४

एत्ति निब्बण होरटवगे
नित्य तृप्तनागिरुववगे
उत्तरणेय वागरनुंडु
तृप्तनागि तॆगिरुववगे
मंगळं जय मंगळं ५

ओदगि मुहूर्तके बंदवगे
सदय हृदयनआगिरुववगे
मुददिंदलि श्री पदुमावतियळ
मदुवे माडिकोंड मदुमगगे

मंगळं जय मंगळं ६

कान्तेयिंद सहितादवगे
संतॊषदि कुळितिरुववगे
संतत श्रीमदनंताद्रीशगे
शांत मूरुति सर्वॊत्तमगे
मंगळं जय मंगळं ७

निन्न ओलुमेयिंद निखिळ जनरु बंदु
मन्निसुवरो महराय [२]
एन्न पुण्यगळिंद ई परि उंटॆनॊ [२]
निन्नदॆ सकल संपत्तु ॥प॥

जीर्ण मलिन वस्त्र काणद मनुजगे
ऊर्ण विचित्र सुवसन
वर्णवर्णदिंद बाहॊदॆनो [२]
संपूर्ण गुणार्णव दॆवा (१)

संजीतनक इद्दु सण्ण सवुटिन
तुंब गंजि काणदे बळळिदेनो
व्यंजन मोदलाद नाना रसंगळ [२]
भुंजिसुवुदु मत्तेनॊ (२)

ओब्ब हेंगसिन होट्टेगे हाकुवदक्किन्नु
तब्बिब्बुगोंडेनो हिंदे

निर्भरदिंदलि सर्वर कूडुंबो [२]
हब्बदूटव उणिसुवियॊ (३)

मनेमने तिरुगिदरु कासु पुट्टदे
सुम्मने चालवरिदु बाळळिदेनो
हण होन्नु द्रव्यंगळ् इद्दल्लिगे [२]
तनगे प्राप्ति नॊडॊ जीय (४)

मध्याह्न कालक्के अतिथिगळिगे अन्न
मेद्देनेंदरे ईयगाणे
ई धरेयोळगे सत्पात्ररिगुनिसुव [२]
पद्धति नॊडो पुण्यात्म (५)

नीचॊच्छ तिळियदे सर्वर चरणके
चाचिदेनोसल हस्तगळ
यॊचिसि नॊडलु सॊजिगवागिदे [२]
वाचक्के निलुकदो हरिये (६)

वैदिक पदवीय कोडुवनिगे लौकिक
ऐदिसुवदु मह ख्याते
मैदुनगोलिद श्री विजयविठ्ठल निन्न [२]
पाद साक्षिय अनुभववो (७)